कुचपिुड़ी

[स्रोत: द हदिू](#)

भारत के सबसे पुराने नृत्य रूपों में से एक **कुचपिुड़ी,** अब युवा पीढ़ी के बीच अप्रचलति होता जा रहा है। कुचपिुड़ी आंध्र प्रदेश के कृष्णा ज़लि का एक गाँव है।

- कुचपिुड़ी एक **नृत्य-नाटकि प्रदर्शन** है, जो प्राचीन कल में पुरुषों तक ही सीमति हुआ करता था। यह **हदिू पौराणकि** कथाओं की कहानयिाँ दर्शाता है और लोगों के बीच अपना संदेश पहुँचाता है। **कुचपिुड़ी भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक है।**
- पीढ़यिों से, लोगों ने **गुरु-शष्यि** परंपरा के माध्यम द्वारा इस शास्त्रीय नृत्य को सीखा है।
- वर्तमान में, यह कला सरकार से **संरक्षण की कमी** के कारण संकट की स्थतिमिें है, साथ ही इस कला ने महामारी के वर्षों में **इसके पारंगत छह गुरुओं** को खो दयिा और भवषि्य में युवाओं के लयि इसमें **अवसरों की कमी** है। वर्ष 2014-18 के बीच संगीत नाटक अकादमी ने आंध्र प्रदेश राज्य सरकार के सहयोग से **कुचपिुड़ी यक्षगानम** के ऑडयिो, वीडयिो और फोटो को संग्रहीत कयिा है।
- **गुरु पसुमर्थी रत्तैया सरमा**, यक्षगणों के एक प्रमुख, कुचपिुड़ी गाँव में रहने वाले सबसे पुराने गुरु हैं।

कुचिपुड़ी
(आंध्रप्रदेश)

उत्पत्ति

17वीं शताब्दी में एक वैष्णव कवि सिद्धेन्द्र योगी ने यक्षगान के रुप में कुचीपुड़ी शैली की कल्पना की।

कुचीपुड़ी आंध्रप्रदेश के कृष्णा ज़िले में स्थित एक गाँव का नाम है।

शृंगार रस की प्रधानता।

विषयवस्तुः पंथ-निरपेक्ष

वाद्ययंत्र

- मृदंगम

- मंजीरा

- वायलिन या वीणा

प्रदर्शन

कावुत्मः नृत्य (व्यापक कलाबाजी) तथा नृत्त (शुद्ध नृत्य)

सोल्लाकाथ या पताक्षरः नृत्त भाग

समूह प्रदर्शन

मुख्य विषयवस्तुः भागवत पुराण की कहानियाँ

नर्तकों को भागवतालु कहा जाता है।

लास्य और तांडव दोनों तत्त्व महत्त्वपूर्ण हैं।

एकल प्रदर्शन

मंडूक शब्दमः एक मेंढक की कहानी।

तरंगमः नर्तक अपने कर्तब को एक पीतल की तश्तरी के किनारे पर पाँव रखकर तथा अपने सिर पर एक जल पात्र या दीयों के एक सेट को संतुलित रखते हुए प्रस्तुत करता है।

जल चित्र नृत्यमः नर्तक/नर्तकी अपने पैर के अंगूठों से सतह पर चित्र खींचता/खींचती है।

प्रसिद्ध प्रतिपादक

- राधा रेड्डी
- राजा रेड्डी
- यामिनी
- कृष्णमूर्ति
- इंद्राणी रहमान

दृष्टि The Vision
Drishti IAS

और पढ़ें: कुचपुड़ी नृत्य शैली

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/kuchipudi